

पाठ 12 अध्याय 11

हमने अभी-अभी गिनती के कुछ अध्याय समाप्त किए हैं, जिनसे हमें बहुत सारी विस्तृत जानकारी मिली है, जिसे पढ़ना थोड़ा कठिन था, लेकिन यह ज़रूरी था, ठीक वैसे ही जैसे अगर हम अपने जीवन में गणित का उपयोग करने में सक्षम होने जा रहे हैं, तो गुणन सारणी सीखना ज़रूरी है। हालाँकि, गिनती अध्याय 11 तोरह के एक ऐसे भाग की शुरुआत करता है, जो मेरे लिए सबसे आकर्षक और जानकारीपूर्ण है। यह जंगल में भटकते हुए इस्राएल के 38 वर्षों की कहानी बताता है। और अगले कई अध्यायों में शिकायत, विश्वास की कमी और स्पष्ट विद्रोह का विषय है। इससे भी ज़्यादा वे उन कठोर दंडों को दर्ज करते हैं, जो यहोवा ने अपने खिलाफ इन अत्याचारों के लिए दिए थे।

तोरह का यह भाग प्रेरित पौलुस को भी आकर्षित करता प्रतीत होता है। उन्होंने अपने लेखन में गिनती की पुस्तक का व्यापक रूप से उल्लेख किया, विशेष रूप से जब वे कुरिन्थियों को लिख रहे थे और उनसे बात कर रहे थे। जाहिर है कि उन्होंने उन कुरिन्थियों, यहूदी और गैर-यहूदी लोगों के व्यवहार और स्थिति के बीच बहुत समानताएँ देखीं, जो मसीह में विश्वास करने लगे थे और उन इस्राएलियों के बीच जो उनके दिन से 13 शताब्दियों पहले मध्य पूर्व के रेगिस्तानी इलाकों में, ज्यादातर बीर-शेवा के दक्षिण में, घूमते थे।

आइए हम गिनती की पुस्तक के इस भाग की तैयारी के लिए संत पौलुस द्वारा कही गई बातों को पढ़ें, जब उन्होंने कुरिन्थ के मसीहियों की तुलना निर्गमन के इस्राएलियों से की थी।

1 कुरिन्थियों 10:1-12 पढ़ें

तोरह उन लोगों को कई गंभीर चेतावनियाँ देता है जो इस्राएल के परमेश्वर का अनुसरण करेंगे, संत पौलुस, एक सुशिक्षित यहूदी रब्बी ने इसे पूरी तरह से समझा और महसूस किया कि, बेशक, मसीह के आगमन से उस स्थिति में कोई बदलाव नहीं आता है। परमेश्वर के प्रति अवज्ञा, भले ही मोचन पूरा हो गया हो, किसी भी तरह से ईश्वरीय दंड की संभावना के खिलाफ एक आस्तिक को प्रतिरक्षित नहीं करता है। संत पौलुस ने रोमियों 15 में लिखा है जो शायद उनकी सभी शिक्षाओं का आधार है, जो कुछ भी पहले के दिनों में लिखा गया था वह हमारे निर्देश के लिए लिखा गया था "

जो कुछ पहले लिखा गया था, वह इब्रानी बाइबिल, तनाख, जिसे हम पुराना नियम कहते हैं, को संदर्भित करता है। या अधिक सामान्य अर्थ में जो कुछ भी यीशु के आगमन से पहले लिखा गया था।

1 कुरिन्थियों 10 में हमने जो पढ़ा, उसके बारे में पौलुस का कहना यह है: यदि परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों, इस्राएल के साथ कठोरता से व्यवहार किया, तो आप क्यों सोचते हैं कि वह मसीहा यीशु के साथ एकता में अपने चुने हुए लोगों के साथ कठोरता से व्यवहार नहीं करेगा? क्या वे लोग जिन्हें हम आम तौर पर "कलीसिया" कहते हैं, अब परमेश्वर के धार्मिक क्रोध के अधीन नहीं हैं?

1 कुरिन्थियों 10 की पहली कुछ आयतें समानांतर स्थिति स्थापित करती हैं: जो लोग जंगल को पार कर गए वे सभी लोग मूसा में डूबे हुए थे (जो कि "मूसा की वाचा" का संक्षिप्त नाम है)। दूसरे शब्दों में वे सभी छुड़ाए गए थे, और वे सभी परमेश्वर की वाचा के अधीन थे। उन सभी को एक ही आत्मा प्राप्त हुई, वे सभी चट्टान के जीवित जल से भर गए थे। फिर पौलुस यह चौंकाने वाला अनुस्मारक देता है उनके उद्धार और परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध के बावजूद, उनमें से कई जीवित नहीं बचे जब परमेश्वर ने उनके विद्रोही शरीरों को रेगिस्तान में फेंक दिया।

यीशु मसीह के अनुयायियों के लिए इसका क्या अर्थ है, इस बारे में उनका निष्कर्ष पद 11 में है, **1 कुरिन्थियों 10:11** ये बातें पूर्वसूचक ऐतिहासिक घटनाओं के रूप में उनके साथ हुई, और वे हमारे लिए चेतावनी के रूप में लिखी गई जो अचरित हयामीम में रहते हैं।

अब स्पष्ट रूप से कहें तो अधिकांश ईसाई संप्रदाय इसे यह कहकर दूर कर देते हैं कि यह उन चीजों के बारे में चेतावनी है जो सच्चे विश्वासियों के साथ संभवतः नहीं हो सकीं। आज ईसाइयों के बीच एक आम विषय यह है कि पुराने नियम का परमेश्वर अब नहीं रहा; या अधिक सटीक रूप से कहें तो वह मौलिक रूप से बदल गया है, जिससे अब कोई कठोरता नहीं रही (भले ही संत पौलुस ने रोमियों 11 में ऐसा कहा हो); विश्वासियों के लिए अब पापों और विद्रोह की कोई सज़ा नहीं है (भले ही यीशु ने मत्ती 7 में ऐसा कहा हो।

मत्ती 7:21 "जो मुझ से, 'हे प्रभु, हे प्रभु!' कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वे ही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा के अनुसार चलते हैं। 22 उस दिन बहुत से लोग मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु! क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की? क्या हम ने तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला? क्या हमने तेरे नाम से बहुत से

आश्चर्यकर्म नहीं किए? 23 तब मैं उनके मुँह पर कह दूँगा, 'मैं तुम को कभी नहीं जानता था। हे कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले जाओ।'

नहीं, संत पौलुस और यीशुआ कहते हैं, यह कोई खोखली चेतावनी या दंतहीन धमकी नहीं है। मेरे भाईयों मेरी बात सुनो: यह उन ईसाई सिद्धांतों में से एक है जिसे सुनकर हमें खुशी होती है क्योंकि यह हमारे निर्णयों और हमारे व्यवहार के सभी नतीजों को दूर करता है, लेकिन इसका कोई शास्त्रीय आधार नहीं है। बल्कि हम जिस चीज से सुरक्षित हैं, वह है जिसे बाइबिल बारी-बारी से "पाप की मजदूरी" (आध्यात्मिक मृत्यु) और "व्यवस्था का अभिशाप" (जो आध्यात्मिक मृत्यु भी है) कहती है, जो दो वाक्यांश हैं जिनका अर्थ एक ही है। वे एक ही हैं, केवल पहला नए नियम के शब्दों में और दूसरा पुराने नियम के शब्दों में कहा गया है।

क्या आप अब भी मानते हैं कि परमेश्वर का अब कोई कठोर पक्ष नहीं है? या कि मसीह में होने से किसी तरह आपको अपने कार्यों के लिए अनुशासित या दंडित होने (ईश्वरीय या प्राकृतिक परिणाम प्राप्त करने के अर्थ में) से क्षमा मिलती है? ओह, बेशक आपको अनन्त मृत्यु से क्षमा मिलती है बशर्ते आप अपनी स्वतंत्र इच्छा से यीशु के प्रति अपनी निष्ठा को त्याग न दें। लेकिन परमेश्वर के नश्वर न्याय से मुक्त होना नए नियम में कहीं नहीं जाना जाता है, न कि पुराने नियम में।

आइये रोमियों 11 में पौलुस की बात को थोड़ा और सुनें; यह नये नियम का एक भाग है जिसे आधुनिक समय में अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है या रूपक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

रोमियों 11: 13–22 पढ़ें

संत पौलुस सिखाता है कि (जैसा कि हमेशा से होता आया है) परमेश्वर कठोर है और वह दयालु भी है। वह उन लोगों के प्रति दयालु है जो भरोसा करते हैं और आज्ञा मानते हैं, वह उन लोगों के प्रति कठोर है जो दूर हो जाते हैं और विद्रोह करते हैं। परमेश्वर का मूल स्वभाव नहीं बदला है। याद रखें कि संत पौलुस विशेष रूप से गैर-यहूदी विश्वासियों और आम तौर पर यहूदी लोगों से बात कर रहा है। वह आपसे और मुझसे बात कर रहा है, इसलिए हम यह दिखावा नहीं कर सकते कि यह हमारे लिए नहीं है।

अतः अगले कुछ सप्ताहों में हम गिनती की पुस्तक में जो अध्ययन करने जा रहे हैं, उसमें वे मूलभूत सिद्धांत हैं, जिन्होंने पौलुस को उसके जीवन में मार्गदर्शन दिया तथा जो उसके पत्रों में प्रतिबिम्बित होते हैं, तथा जो कलीसिया के सिद्धांत का आधार हैं, तथापि प्रायः ऐसा नहीं होता।

गिनती में हम देखते हैं कि माउंट सिनाई को छोड़ने के बाद इस्राएल ने जो पहली चीज़ की वह विद्रोह करना था। मूसा भी बड़बड़ाने वाला बन जाता है। अगले 15 अध्यायों में हम 6 पहचाने जाने योग्य विद्रोहों के बारे में विस्तार से बताएँगे और उनमें से हर एक वास्तविक था और यहोवा के खिलाफ विद्रोह के “प्रकार” का प्रतिनिधित्व करता है। कुछ विद्रोह आम लोगों द्वारा किए गए थे, कुछ जनजातीय नेताओं द्वारा, कुछ लेवियों द्वारा और कुछ मूसा द्वारा भी किए गए थे। संक्षेप में, जैसे प्रकाशितवाक्य के 7 चर्च वास्तविक और प्रकार दोनों हैं, वैसे ही गिनती में इस्राएल के लोगों के विद्रोह हमें एक पैटर्न प्रस्तुत करते हैं जिसकी हम चर्च के भीतर होने की उम्मीद कर सकते हैं और जब मैं चर्च कहता हूँ तो बैप्टिस्ट और मेथोडिस्ट और कैथोलिक आदि के संदर्भ में सोचना शुरू न करें। इसका मतलब है कि संप्रदायों और संस्थानों और इमारतों की कल्पना न करें। बल्कि व्यक्तिगत विश्वासियों और फिर विश्वासियों के विभिन्न समूहों के बारे में सोचें।

व्यापक दृष्टिकोण से हम मानवीय रिश्तों, मानवीय नेतृत्व, मनुष्य की सीमाओं, ईश्वर की अपेक्षाओं और माँगों तथा हमारी असफलताओं के दैवीय परिणामों पर विचार करते हुए कई सप्ताह बिताने वाले हैं।

आइये गिनती 11 पढ़ें।

गिनती 11 पूरा पढ़ें

अध्याय 10 इस आशावादी, प्रार्थनापूर्ण, आनंदपूर्ण कविता के साथ समाप्त होता है, जो इस्राएल के लोगों की मानसिक और भावनात्मक स्थिति को व्यक्त करता है जब वे अपने सफर के लिए शिविर छोड़ना शुरू करते हैं। वादा किया हुआ देश:

गिनती 10:35 जब सन्दूक निकल आया, तब मूसा ने कहा, “हे यहोवा, उठा तेरे शत्रु तितर-बितर हो जाएँ, और तेरे बैरी तेरे साम्हने से भाग जाएँ।” 36 और जब सन्दूक ठहर गया, तब मूसा ने कहा, “हे यहोवा, तू इस्राएल के लाखों लाखों लोगों के पास लौट आ।”

तोरह के अगले ही वाक्य, गिनती 11 की आयत 1 में यह कहा गया है।

गिनती 11:1 और लोग यहोवा के साम्हने शिकायत करने वालों के समान हो गए, और जब यहोवा ने सुना, तब उसका कोप भड़क उठा, और यहोवा की आग उनके मध्य जल उठी, और छावनी के बाहर के कुछ भागों को भस्म कर दिया।

गिनती 10:36 और गिनती 11:1 के बीच कितना समय बीता? उनके रवैये और व्यवहार में आमूलचूल परिवर्तन होने में कितना समय लगा? तीन दिन! कितनी बार हम अपने घुटनों पर गिरे हैं या प्रभु की स्तुति और आराधना में अपने हाथ ऊपर उठाए हैं, और फिर कुछ ही घंटों में हार मान कर मुँह के बल गिर पड़े हैं। क्या हमें इस बात से निराश हो जाना चाहिए और हार मान लेनी चाहिए? नहीं। कुछ मायनों में, हमें इसकी उम्मीद करनी चाहिए। इस अर्थ में नहीं कि हम अपनी यात्रा शुरू करने से पहले ही हार की उम्मीद करें, बल्कि इस अर्थ में कि हमारे अंदर ईश्वर की आत्मा तो है, फिर भी हम अपने साथ ये शारीरिक तंबू और वो दुष्ट प्रवृत्ति लेकर चलते हैं, जो हमारे स्वभाव में निहित है। इसलिए कुछ हद तक असफलता अपरिहार्य है।

उन्होंने कहा कि असफलता की मात्रा काफी हद तक हमारी इच्छाशक्ति से जुड़ी हुई है। हम ईश्वर पर कितना विश्वास करने के लिए तैयार हैं, और ईश्वर को जानने में अपना समय और ऊर्जा कितनी लगाते हैं? हम ईश्वर की आज्ञाकारिता के पक्ष में शैतान और अपनी इच्छाओं का कितना विरोध करने के लिए तैयार हैं? इस संबंध में पुराने नियम और नए नियम दोनों में एक सीधा प्रतिफल स्थापित किया गया है। प्रभु के साथ चलें और कम असफल हों। प्रभु से दूर चले जाएँ, अपना रास्ता चुनें और अधिक असफल हों।

आप देख सकते हैं कि हमें यीशु को अवश्य अपनाना चाहिए, क्योंकि ईश्वर के सामने मानवता और असफलता एक साथ चलते हैं। जब हमने लैव्यव्यवस्था का अध्ययन किया तो हमने देखा कि पाप कितना बहुआयामी और अपरिहार्य है। कितनी कपटी अशुद्धता है। हमारे उद्धारकर्ता के बिना हमारी स्थिति कितनी निराशाजनक है। हम पाप करेंगे। हम असफल होंगे। लेकिन हम अपने पाप और असफलता की गहराई को भी कम कर सकते हैं यदि हम खुद को ईश्वर की आज्ञाओं, आत्मा की शक्ति और हमारे मसीहा के उद्धार के लिए समर्पित करते हैं।

पद 1 कहता है कि लोग शिकायत करने वालों का समूह बन गए। वास्तव में हमें ठीक से नहीं बताया गया है कि वे किस बारे में शिकायत कर रहे थे। फिर भी हम अनुमान लगा सकते हैं कि इसका संबंध उस कठिन मार्च से था जिसे वे वर्तमान में झेल रहे थे क्योंकि 11:1 से ठीक पहले के पद (यानी अध्याय 10 के अंतिम कई पद) उनके मार्च करने और अग्नि-बादल का अनुसरण करने के बारे में हैं।

और ईमानदारी से कहूँ तो वे जिस कठिनाई का सामना कर रहे थे वह बहुत बड़ी थी। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि 2-3 मिलियन लोगों और सैकड़ों हज़ारों जानवरों ने हवा में कितनी धूल उड़ाई होगी? वे किसी अच्छी तरह से तैयार राजमार्ग पर नहीं थे, हालाँकि वे किसी तरह के जाने-पहचाने रास्ते पर चल रहे थे, लेकिन जहाँ मुझे लगता है कि वे थे (पहाड़ी और चट्टानी रेगिस्तानी इलाके में मिद्यान के उत्तर में) वहाँ चलना बहुत चुनौतीपूर्ण था। हर परिवार में छोटे बच्चे थे। हर परिवार में बुजुर्ग और बीमार लोग थे। सर्दियों में रात का तापमान अक्सर हिमांक से नीचे चला जाता था, विस्तारित गर्मी के मौसम में हर दिन यह 100 डिग्री से भी ज़्यादा होता था। यह सबसे अच्छी परिस्थितियों में भी सुखद समय नहीं था।

इससे भी बदतर यह है कि उन्होंने अपनी शिकायत सीधे प्रभु के पास ले गए, और पाठ कहता है कि यह कड़वी शिकायत थी। वास्तव में इब्रानी में कड़वी शिकायत के लिए शब्द "अल रा" है। अल का अर्थ शिकायत है, और रा का शाब्दिक अर्थ बुराई है। इसलिए जबकि कड़वा सही है, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि कड़वा शब्द का सार बुराई में निहित है। इस वाक्यांश का विचार यह है कि इस्राएलियों ने परमेश्वर की दया, उनकी भलाई के लिए रा के साथ जवाब दिया बुराई, कड़वाहट।

इस अविश्वसनीय रूप से निर्लज्ज कृत्य का परिणाम यह हुआ कि परमेश्वर ने उन्हें आग से दण्डित किया। यह आग क्या थी? खैर, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण यह दिव्य और अलौकिक थी। यह बिजली हो सकती है। यह उसी तरह की हो सकती है जो यहोवा ने सदोम और अमोरा पर बरसाई थी। जो कुछ भी था वह उनके बीच में स्थित जंगल के तम्बू से नहीं आया था, और हम यह जान सकते हैं, क्योंकि यह कहा गया है कि आग शिविर के "बाहरी इलाकों में लगी थी।"

मूसा ने हस्तक्षेप किया (जो उसका काम था) और परमेश्वर ने सजा रोक दी। जिस जगह पर वे थे, उस समय उसका नाम तबेरा था; इब्रानी में तबेरा का मतलब है, "जलना"। प्राचीन लोगों (और विशेष रूप से इब्रानियों के बीच) में यह आम बात थी कि किसी जगह का नाम वहाँ हुई घटनाओं के नाम पर रखा जाता था। और इसलिए हमारे पास विद्रोह नंबर एक है, साथ ही इसके परिणाम भी।

पर 4 अगले विद्रोह को स्पष्ट करता है, जो भोजन से संबंधित था। सबसे पहले मैं यह बताना चाहता हूँ, कि इस दूसरे विद्रोह के स्थान को लेकर कुछ मामूली मतभेद हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि उन्होंने तबेराह में शिविर तोड़ा और चले गए और फिर यह दूसरा विद्रोह हुआ।

दूसरों का कहना है कि वे कुछ समय के लिए तबेराह में रहे और यह तबेराह ही था जहाँ यह दूसरा विद्रोह भी हुआ। मुझे लगता है कि वे पाठ के स्पष्ट पढ़ने के कारण तबेराह में ही थे। यह असामान्य नहीं है कि उन्होंने उसी स्थान पर एक और नाम (किब्रोध—हतावा) जोड़ा।

हम जो देख रहे हैं वह यह है कि मिस्र से माउंट सिनाई तक की यात्रा और फिर माउंट सिनाई से कादेश तक की यात्रा के बीच एक समानता होने जा रही है। यहाँ हमारे पास एक उदाहरण है, माँस के लिए रोना है। हमने इसे निर्गमन में देखा था और प्रभु ने उन्हें खाने के लिए बटेर भेजकर जवाब दिया था।

अब पद 4 के पहले शब्द संकेत देते हैं कि यह लोगों का एक निश्चित समूह था जिसने माँस के लिए शिकायत शुरू की और फिर शिकायत पूरे शिविर में फैल गई। और शिकायत करने वालों के उस समूह को इब्रानी में 'असफसूफ' कहा जाता है, और इसका अर्थ है भीड़, बदमाश। यह शब्द एक अन्य अद्वितीय इब्रानी शब्द के समान ही बनाया गया है जिसका उपयोग निर्गमन में किया गया था: 'Erev', जिसका अर्थ है मिश्रित भीड़। विद्वान इस बात पर एकमत हैं कि 'असफसूफ' उस मिश्रित भीड़ को संदर्भित करता है, मिस्र से आए हज़ारों गैर-इस्राएली लोग जिन्हें इस्राएली शिविर के बाहरी इलाके में डेरा डालना था। दूसरे शब्दों में ये शिकायत करने वाले निवासी विदेशी थे; वे लोग थे जो इब्रानी नहीं थे; वे विदेशी थे जो विदेशी बने रहना चाहते थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पहले विद्रोह में शिविर के बाहरी इलाके में आग लगने का संदर्भ 'असफसूफ' शब्द के उपयोग से जुड़ा है, यह वर्णन करने के लिए कि वह कौन था जिसने अपने आहार में अधिक विविधता के लिए सभी शिकायतें शुरू कीं। ये पहले दो विद्रोह उन मूर्तिपूजकों के कारण शुरू हुए जो खुद को इस्राएल से जोड़ चुके थे, लेकिन जो उनके विश्वास या उनके मिशन को साझा नहीं करते थे। वे बस इस पसंदीदा लोगों के करीब रहने से जो भी लाभ प्राप्त कर सकते थे, उसे प्राप्त करना चाहते थे, लेकिन साथ ही कठिनाइयों से भी बचना चाहते थे।

अब अगली आयत में एक दिलचस्प मोड़ आता है। वे माँस के बारे में शिकायत क्यों कर रहे थे? उनके पास झुंड और समुदाय थे। उन्हें जो माँस चाहिए था वह मछली थी। मछली क्यों? क्योंकि जब वे मिस्री में गुलाम थे तो प्रोटीन के लिए यही उनका मुख्य आहार था।

अवारिस के आसपास, गीज़ा के पिरामिडों के नीचे, तथा मिस्र में राजाओं की घाटी में शानदार भूमिगत कब्रों के पास मिली दिलचस्प खोजों से यह पुष्टि होती है कि मजदूरों, निर्माण श्रमिकों, चाहे वे इब्रानी हों या मिस्री, का मुख्य भोजन मछली ही थी।

मछलियों की हड्डियों की भारी मात्रा हर जगह बिखरी हुई पाई गई, जो स्पष्ट रूप से अच्छी तरह से सुसज्जित भोजन क्षेत्रों में बिखरी हुई थी, जहाँ एक समय में सैकड़ों लोग भोजन कर सकते थे। और यह समझ में आता है। नील नदी मछलियों का एक बड़ा स्रोत थी। यह एक बहुत लंबी नदी थी जो मिस्र की लंबाई तक फैली हुई थी। इसलिए मिस्र में लगभग हर जगह मछलियाँ प्रचुर मात्रा में और उपलब्ध थीं। और, मछलियों को आसानी से सुखाया, संरक्षित और परिवहन किया जा सकता था। मिस्र के कुछ क्षेत्रों में ही मवेशियों को पाला जा सकता था जहाँ पर्याप्त चरागाह था और गोमँस कुछ ही घंटों में खराब हो जाता था। इसलिए गोमँस अधिक महँगा था और समाज के अमीर लोगों को छोड़कर कम उपलब्ध था।

बेशक जंगल में वे बगीचा भी नहीं लगा सकते थे, सिवाय इसके कि वे लंबे समय तक रुकें, जो उन्होंने कभी-कभी किया भी। इसलिए पद 5 में वे यह भी शिकायत करते हैं कि उन्हें ताजे फल या सब्जियाँ नहीं मिल रही हैं।

मिस्र छोड़ने के बाद से उनका मुख्य भोजन मन्ना था। और वे पहले से ही इससे तंग आ चुके थे। तला हुआ, मन्ना, उबला हुआ मन्ना, भुना हुआ मन्ना, पका हुआ मन्ना, कच्चा मन्ना। जैसा कि पद 7 और 8 में बताया गया है, इसका स्वाद काफी अच्छा था। लेकिन यह ऐसा आहार नहीं था जिसका वे आदी थे, न ही यह स्वादों की पूरी श्रृंखला प्रदान करता था जैसा कि वे गोर्शेन की भूमि में इस्तेमाल करते थे।

मन्ना से जितने लोग परेशान थे, मूसा भी लोगों से उतना ही परेशान था। वह थका हुआ, निराश और हताश था। यह हास्यास्पद होता अगर यह इतना दुखद न होता, क्योंकि पद 10 कहता है: "प्रभु क्रोधित था, और मूसा व्यथित था।" क्या गड़बड़ है। पूरी तरह से हतोत्साहित मूसा क्रोधित प्रभु के पास जाता है और मूल रूप से कहता है मैं इन लोगों के साथ और अधिक व्यवहार करने के बजाय मर जाना पसंद करूँगा। मूसा आगे कहता है कि मैंने ऐसा क्या किया है जिसके लिए मुझे यह सब सहना पड़ रहा है? मैंने इन लोगों को नहीं बनाया। मैंने इस महान योजना के बारे में नहीं सोचा। यह मेरी वाचा नहीं थी जो यह कहती थी कि तुम्हारे लोगों के पास अपनी भूमि होनी चाहिए, तो वे मेरा बोझ क्यों हैं?

मूसा कहता है, मुझे इतनी सारी तरह की खाने की चीजें कहाँ से लानी चाहिए, जिसकी वे सब शिकायत कर रहे हैं? मैं एक ही समय में सबको कैसे खुश कर सकता हूँ? एक को यह चाहिए, दूसरे को वह चाहिए। दूसरी बार सोचने पर, बस मुझे गोली मार दो। मेरा मतलब है कि मूसा वाकई बहुत मूड में था।

दिलचस्प बात यह है कि मूसा के परमेश्वर पर भड़कने के बाद, परमेश्वर ने उसे इसके लिए दंडित नहीं किया। बल्कि वह उसके अनुरोधों को पूरा करने लगा। मुझे याद है कि मेरे दिवंगत पिता ने कई साल पहले मुझसे कहा था कि परमेश्वर पर गुस्सा होना और उन्हें अपनी भावनाओं को बताना ठीक है। वह इसे बर्दाश्त कर सकते हैं। और आप जानते हैं, वास्तव में, किसी के साथ हमारा रिश्ता जितना करीबी होता है, हम उतना ही संवाद करने और अपने डर, निराशा और चिंताओं को साझा करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। और वास्तव में मूसा यही कर रहा था। मूसा का परमेश्वर के साथ एक ईमानदार रिश्ता था। उसने परमेश्वर को अपनी निराशाओं के बारे में बताया।

उसने परमेश्वर को बताया कि उसके अंदर क्या चल रहा था। और परमेश्वर ने उसे सजा नहीं दी या यह नहीं कहा कि "तुम मुझसे कभी इस तरह बात मत करना। देखो यहोवा असुरक्षित नहीं है; वह जानता है कि वह कौन है और तुम कौन हो।

हमें बताया गया है कि हमें परमेश्वर के पास जाकर, आत्मा और सच्चाई से प्रार्थना करनी चाहिए। वैसे मूसा ने परमेश्वर के पास सच्चाई से प्रार्थना की, भले ही वह विशेष रूप से शिक्षाप्रद भावना से न हो। हमें उस उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए।

तो यहाँ परमेश्वर की ओर से शिकायतों का समाधान है: 70 बुजुर्गों (इस्राएल के आम नेता) को ले लो और उन्हें तम्बू के सामने ले आओ। दूसरे शब्दों में, उन्हें परमेश्वर के सामने पेश करो ताकि वे बोझ को साझा करने के लिए अधिकृत हो सकें। याद कीजिए कि परमेश्वर ने 70 बुजुर्गों को माउंट के किनारे आने के लिए बुलाया था।

सिनाई, मूसा के साथ, उत्पत्ति में बहुत पहले। समझे यह मूसा को अधिक सलाह देने के लिए बनाई गई परिषद नहीं थी (उसके पास पहले से ही इतनी सलाह और सुझाव थे कि वह उन्हें संभाल नहीं सकता था)। बल्कि इन लोगों को बोझ का एक हिस्सा उठाना था। उन्हें काम करना था, सुझाव नहीं देना था।

अब अगले कई पद कुछ ऐसी बात कहते हैं जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए: यह परमेश्वर की **रूह**, उसकी आत्मा के बारे में बात करता है। मुझे यकीन नहीं है कि विश्वासियों के समूह के भीतर पवित्र आत्मा के कार्य से ज़्यादा ईश्वरत्व का कोई और विवादास्पद पहलू है। लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ आत्मा के बारे में कुछ समझ हासिल करने का अवसर है।

पद 17 में परमेश्वर कहता है कि वह इन 70 प्राचीनों को मूसा के अगुवे-सहायक के रूप में अभिषेक करने जा रहा है। लेकिन इन 70 लोगों को सिर्फ साधारण पर्यवेक्षक, लेखाकार और न्यायाधीश न बनने देने के लिए परमेश्वर इन लोगों पर **वही आत्मा** डालने जा रहा था जो मूसा पर थी। यही एकमात्र तरीका था, जिससे ये लोग परमेश्वर के अधिकार को ले जा सकते थे, जो उनके नए कर्तव्यों को पूरा करने के लिए बिल्कुल जरूरी था। वास्तव में यह कहता है कि परमेश्वर मूसा पर जो आत्मा थी, उसे 70 लोगों के साथ साझा करने या उससे प्राप्त करने जा रहा था। इब्रानी में इसका अर्थ है वे **अत्सलती मिन**, और इसका शाब्दिक अर्थ है सुरक्षित रखना या वापस लेना।

तो क्या यहाँ जो कुछ है वह मूसा से 70 लोगों में आत्मा का प्रत्यारोपण है? क्या आत्मा के प्रत्यारोपण का विचार आपको थोड़ा अजीब या विचित्र लगता है? खैर, इस तरह की बात 13 या उससे भी अधिक शताब्दियों बाद पेंटेकोस्ट पर फिर से होने जा रही है। मसीह की मृत्यु के तुरंत बाद शवोत् (ग्रीक में पेंटेकोस्ट) के पर्व के दौरान, वही आत्मा जिसने यीशुआ को सशक्त बनाया था, अब मनुष्यों के बीच साझा की जानी थी और प्रदान की जानी थी। यह दिलचस्प है कि यीशुआ ने कहा कि आत्मा तब तक नहीं आ सकती जब तक वह चला नहीं जाता। क्यों नहीं? खैर, यह एक ऐसा मामला है जिसके लिए कुछ अटकलें लगाने की आवश्यकता है। क्या यह संभव है कि उसके बपतिस्मा और उस पर परमेश्वर की आत्मा के उतरने के बाद से, यीशुआ कुछ समय के लिए पृथ्वी पर पवित्र आत्मा का एकमात्र पात्र था? क्या यह सब मूसा के बाद हुआ था, जिसके द्वारा कुछ समय के लिए मूसा एकमात्र मनुष्य प्रतीत हुआ जिस पर परमेश्वर ने अपनी आत्मा प्रदान की थी? इसलिए जब मूसा के अधिकार और कर्तव्यों को साझा करने का समय आया, तो इसे मूसा (इसका एकमात्र सांसारिक पात्र) से 70 लोगों तक ले जाना पड़ा।

बेशक मुझे **लगता** है कि यही हो रहा है, किसी तरह से जिसे शब्दों में बयाँ करना लगभग असंभव है। हमारे मसीहा ने हमें निर्देश दिया कि हर आत्मा से भरे विश्वासी का काम झुंड को खिलाना है, शिष्यों के समूह की देखभाल करना है, दुनिया भर में उनका संदेश ले जाना और नए शिष्य बनाना है। कुछ आत्मा से भरे विश्वासियों का काम दूसरे विश्वासियों का नेतृत्व करना है। लेकिन हमें यह सब अपनी शक्ति से नहीं करना है, हालाँकि हम कुछ हद तक (कम से कम बाहरी तौर पर) सफल हो सकते हैं। और, हमें यीशु के जाने के बाद ऐसा करना शुरू करना था, और उसी शक्ति और अधिकार से जो उनके पास था: रूआख हाकोदेश पवित्र आत्मा। जब यीशु व्यक्तिगत रूप से हमारे साथ थे, तो उन्होंने खुद बोझ उठाया। अब हमें उनके साथ बोझ साझा करना है। इसका मतलब यह है कि हमें अपना खुद का क्रूस उठाना है और उनका अनुसरण करना है। यह

सब बोझ साझा करने के बारे में है। सच कहूँ तो, यह पूरी शिक्षा हमारी सामान्य ईसाई निष्क्रियता को बहुत गैर-जिम्मेदाराना बनाती है, है न?

मैं स्पष्ट कर दूँ, ऐसा नहीं है कि पवित्र आत्मा की कोई सीमित मात्रा है। लेकिन परमेश्वर की आत्मा केवल एक ही है। मुझे नहीं लगता कि मैं इसे और बेहतर तरीके से समझा सकता हूँ और न ही मुझे लगता है कि रूआख, पवित्र आत्मा कैसे काम करती है, इसका कोई बेहतर शब्द-चित्र यहाँ मूसा और 70 के साथ गिनती में है। और यह कैसे इस पैटर्न के बाद था कि इसका नया नियम संस्करण, पहले मसीह में और फिर मसीह से विश्वास करने वाले समुदाय तक, प्रकट होगा।

वैसे: ध्यान दें कि 70 लोगों को प्रभु के सामने लाया जाना था, जंगल के तम्बू में लाया जाना था। क्यों? क्योंकि यह परमेश्वर था जो आत्मा का प्रत्यारोपण कर रहा था, मूसा नहीं। और परमेश्वर के पवित्र स्थान पर ऐसा करने से सभी को यह स्पष्ट हो गया कि यह मूसा की शक्ति से नहीं बल्कि परमेश्वर की शक्ति से था कि आत्मा के चमत्कार को जिम्मेदार ठहराया जाएगा। हमारे साथ भी ऐसा ही है। हम लोगों को गवाही दे सकते हैं, और हम कह सकते हैं कि हम लोगों को प्रभु के पास लाए। यह सच है। लेकिन मूसा की तरह जिसने उन 70 लोगों को तम्बू में, परमेश्वर के निवास स्थान तक पहुँचाया, हम उन्हें यहीं तक ले जा सकते हैं। एक निश्चित अर्थ में हम उन्हें प्रभु के सामने आने के लिए राजी कर सकते हैं और सहमत कर सकते हैं, लेकिन उस बिंदु से आगे यह पूरी तरह से परमेश्वर का चमत्कार और कार्य है कि पवित्र आत्मा को प्रत्येक नए विश्वासी में प्रत्यारोपित किया जाए।

अब अगले सप्ताह हम जारी रखेंगे और देखेंगे कि कैसे परमेश्वर इस्राएलियों को और विदेशियों को माँस देता है। बटेर, वास्तव में, यह वैसा ही था जैसा उसने पहले एक बार किया था। लेकिन, इसमें एक बड़ा अंतर होने वाला है। यह है कि पहली बार, उसने अपनी कृपा से एक वास्तविक और ठोस जरूरत को पूरा करने के लिए ऐसा किया था। इस बार, वह अपनी बात मनवाने के लिए क्रोध में ऐसा करेगा। और, इस तरह से परमेश्वर को भड़काने के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी होगी।